प्रत्यय

[शास्त्री द्वितीय वर्ष]

→ प्रत्यय = प्रति (साथ में पर बाद में) + अय (चलनेवाला) शब्द का अर्थ है पीछे चलना।

→ जो शब्दांश शब्दों के अन्त में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे-

दयालु = दया शब्द के अन्त में आलु जुड़ने से अर्थ में विशेषता आ गयी। अतः यहाँ 'आलु' शब्दांश प्रत्यय है।

→ प्रत्ययों का अपना अर्थ कुछ भी नहीं होता और न ही इनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से होता है।

→ प्रत्यय के दो भेद हैं-

1. कृत् प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

→ वे प्रत्यय जो क्रिया के मूल रूप यानी धातु (Root word) में जोड़े जाते हैं, कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय से बने शब्द कृदन्त (कृत् + अंत) शब्द कहलाते

Scanned with CamScanner

हैं। जैसे—

लिख + अक = लेखक (यहाँ अक कृत् प्रत्यय है तथा लेखक कृदन्त शब्द है।

→ वे प्रत्यय जो क्रिया के मूल रूप यानी धातु को छोड़कर अन्य शब्दों — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण व अव्यय — में जुड़ते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय से बने शब्द तद्धितांत शब्द कहलाते हैं। जैसे—

सेठ + आनी = सेठानी

यहाँ आनी तद्धित प्रत्यय है तथा सेठानी तद्धितांत शब्द है।

→ इस प्रकार कृत् और तद्धित प्रत्यय में मूल अन्तर यह है कि कृत् प्रत्यय धातुओं में लगते हैं, जबकि तद्धित प्रत्यय धातुओं से भिन्न शब्दों में लगते हैं।

→ दोनों प्रत्ययों में समानता यह है कि दोनों प्रकार के प्रत्ययों से बनने वाले शब्द संज्ञा या विशेषण होते हैं।

भूपेन्द्र सिंह
सहायक प्राचार्य, हिन्दी
अवध बिहारी संस्कृत महाविद्यालय,
रहीमपुर, खगड़िया

Scanned with CamScanner